प्रेस पंजीयन एम.पी.एच.आई.एन./२०११/४८५६५

देश के हर नगर व ग्रामांचल में
दैनिक निर्दलीय
को प्रतिनिधि चाहिए
साहित्यिक,सांस्कृतिक व सामाजिक
अभिरुचि वालों को प्राथमिकता।
संपर्क करें-+91 8839797448/9424443401
निर्दलीय प्रकाशन
फ१९६/७ शिवाजी नगर, भोपाल ४६२ ०१६

निर्दलीय प्रकाशन का स्वर्ण जयंती वर्ष

निर्दलीय

संपर्क-फ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल

निष्पक्षता, निर्वैरता व निर्भयता का दैनिक प्रवक्ता

ई-मेल: nirdaliyadaily@gmail.com,nirdaliya@rediffmail.com

दैनिक निर्दलीय
साप्ताहिक निर्दलीय
और मासिक निर्दलीय
अब तीनों स्वरूपों में वेबसाइट
www.nirdaliya.comपर उपलब्ध
विधि: पहले उक्त लिंक पर जाएं
फिर क्लिक करें
e-paper, इसके बाद दैनिक निर्दलीय जिस तारीख
का पढ़ना हो वह तारीख और पृष्ठ संख्या डालें।
साप्ताहिक हेतु weekly निर्दलीय
और मासिक हेतु Magazine निर्दलीय क्लिक करें
निर्दलीय एफ-११६/७ शिवाजी नगर, भोपाल-४६२०१६

वर्ष-५३/१५ अंक- ९० भोपाल, १२ अक्टूबर, डाक १३ अक्टूबर २०२५ भोपाल व नई दिल्ली से प्रकाशित पृष्ठ -८ मूल्य १+१/-(संप्रेषण/स्वैच्छिक)

झूठों के बीच एक भी सच्चा नहीं मिला। खुदगरजी की राह चला ऐसा सिलसिला।।

अग्र विचार
विचार प्रवाह-२९६

कैलाश आदमी

कट्टरपंथी हिंदुओं की सबसे बड़ी संस्था राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ना तो पंजीकृत है और ना ही इसका वार्षिक लेखा-जोखा सरकार और जनता के सामने रखा जाता है। संस्था दावा करती है कि यह संगठन ना केवल भारत बल्कि दुनिया के राष्ट्रभक्तों का सबसे बड़ा समुदाय है तथा इसका राजनीति से कोई संबंध नहीं है जबकि इसके स्वयंसेवक से लेकर संघ प्रमुख तक संस्था द्वारा स्थापित राजनीतिक दल विशेष का समर्थन व प्रचार करते हैं तथा राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में भी कई बार लिप्तता सिद्ध हुई है।

संस्था का पंजीयन ना होने से इसके पदाधिकारियों विशेषकर सरसंघचालक जैसे सर्वोच्च पद का चुनाव नहीं कराया जाता बल्कि १९२५ में श्री बलिराम केशव हेडगेवार इसके स्वयंभू सरसंघचालक बने तथा उन्होंने जीतेजी गुरु गोलवलकर को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। श्री हेडगेवार का २१ जून १९४० को निधन हो गया तथा श्री माधव सदाशिव गोलवलकर को ३ जुलाई को निर्वाचित सरसंघचालक बताया गया जबकि संघ में चुनाव की कोई परंपरा नहीं रही है। वस्तुतः श्री गोलवलकर को श्री हेडगेवार नामजद कर गए थे इसलिए अन्य पदाधिकारियों ने उन्हें चुना हुआ घोषित कर दिया। ३० जनवरी १९४८ को गांधी हत्या के बाद गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटैल ने यह कहकर संघ पर बंदिश लगा दी कि राष्ट्र विरोधी विचारधारा से प्रेरित गोडसे ने गांधीजी की हत्या की। १२ जुलाई १९४९ को प्रतिबंध तब हटाया गया जब संघ ने हिंसा से दूर रहने का वचन दिया। इसके विपरीत संघ में सेना के समानांतर गतिविधियां जारी रही तथा संघ के स्वयं सेवक सुबह शाखा में लाठियां लेकर जाते रहे और भयमूलक प्रदर्शन करते रहे। संघ ने पथ संचलन की परंपरा शुरू कर सार्वजनिक रूप से दशहतगर्दी का काम जारी रखा। १९४९ में विद्यार्थी परिषद और १९५५ में भारतीय मजदूर संघ की स्थापना की गई। अगले दशक में कई राज्यों में कांग्रेस विधायकों की खरीद फरोख्त कर संयुक्त विधायक दल सरकारें बनाई गई और इन सरकारों के सहारे ना केवल मजदूर संघ व विद्यार्थी परिषद बल्कि विद्याभारती जैसी संस्थाएं बनाकर सरकार से जमीनों और आर्थिक संसाधनों का जुगाड़ किया जाता रहा। १९७५ में २५ जून को इंदिरा गांधी सरकार ने आपातकाल लगा दिया तथा संघ की हिंसक गतिविधियों को देखते हुए ४ जुलाई को संघ पर बंदिश लगा दी जिसके विरूद्ध हजारों स्वयं सेवकों ने जेलें भर दीं। आपातकाल हटाए जाने के बाद संघ प्रणीत भारतीय जनसंघ का १९७७ में जनता पार्टी में विलय हो गया और मोरारजी देसाई के नेतृत्व में सरकार बनी तो उसमें जनसंघ के पूर्व अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी और आडवाणी सम्मिलित हुए किंतु सरकार पौने तीन साल में गिर गई क्योंकि अटल-आडवाणी संघ से रिश्ता तोड़ने तैयार नहीं थे। १९८० में पूर्व जनसंघियों ने भारतीय जनता पार्टी बना ली तथा १९९२ में जब बाबरी मस्जिद गिराई गई तो केंद्र सरकार ने इसमें संघ की भागीदारी को देखते हुए १० दिसंबर को प्रतिबंध लगा दिया जो ४ जून को हटाया जा सका। ११ मार्च १९९४ को पहली बार कोई क्षत्रिय स्वयं सेवक सरसंघ चालक बना उसका नाम था रज्जू भैया। संघ के स्वयं सेवक भारतीय जनसंघ के प्रचारक का काम करते थे, उन्होंने भाजपा के लिए चुनाव प्रचार किया जिससे भाजपा के नेतृत्व वाली राजग सरकार १९९८ में बन सकी। रज्जू भैया के बाद ११ मार्च २००० को श्री सुदर्शन संघ के पांचवें सरसंघचालक बने तथा उन्होंने श्री मोहन भागवत को स्वयं वर्ष २००९ में संघ का प्रमुख बनाया।

संघ के स्वयं सेवक, प्रचारक और अन्य पदाधिकारी वर्ष २०१५ तक खाकी नेकर पहनते थे किंतु उन्हें अगले वर्ष भूरे रंग की पतलून पहनने की अनुमति दी गई। श्री दत्तात्रेय होसवाले पहली बार वर्ष २०२१ में संघ सरकार्यवाह बने जिनके सहयोग से वर्तमान सरसंघचालक विगत २ अक्टूबर २०२५ से संघ का शताब्दी समारोह मना रहे हैं।

यह पहला अवसर था जब देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने १५ अगस्त २०२५ को लालकिले से भाषण देते हुए संघ को सबसे बड़ा राष्ट्रभक्त, त्यागी और वफादार संगठन निरूपित किया तथा शताब्दी समारोह शुरू होने पर १०० रुपए का सिक्का और डाक टिकट जारी किया। संघ जो राष्ट्रीय ध्वज के स्थान पर शाखाओं में भगवा ध्वज फहराता रहा है तथा स्वाधीनता दिवस और गणतंत्र दिवस पर भी उसके स्वयंसेवक भगवा ध्वज को गुरु मानकर सलामी देते रहे हैं उन्हें ५३ वर्ष बाद ऐसे विशेष अवसर पर राष्ट्रीय ध्वज को सलामी की छूट दी गई जिसे दिखावटी ही कहा जाएगा क्योंकि संघ के स्वयं सेवकों को सर्वप्रथम गुरु निष्ठा का पाठ पढ़ाया जाता है और उन्हें वर्ष में एक से कम एक बार गुरु पूर्णिमा के दिन गुरु दक्षिणा देना पड़ती है। संघ देश का एकमात्र ऐसा संगठन है जो भारत के स्वाधीनता संग्राम से ना केवल दूर रहा बल्कि गांधी प्रणीत असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ों आंदोलन जैसे अभियानों से स्वयं सेवकों को दूर रखा तथा ब्रिटिश सरकार के प्रति निष्ठा जताता रहा। जिन दिनों गांधीजी ने असहयोग आंदोलन छेड़ा था उन दिनों संघ ने जंगल सत्याग्रह चलाया तथा इस दौरान आदिवासियों जिन्हें संघ वनवासी कहता है को भी स्वाधीनता आंदोलन से दूर रखने में सफल रहा।

अंत में मेरी दो काव्य पंक्तियां-

झूठों के बीच एक भी सच्चा नहीं मिला।
खुदगरजी की राह चला ऐसा सिलसिला।।

लद्दाख लूटने तैयार हुक्मरान

कुलभूषण उपमन्यु

लद्दाख पिछले कुछ वर्षों से कुछ मुद्दों को लेकर आंदोलित है। वहां धारा 370 हटने की खुशी मनाई गई थी, क्योंकि वह काश्मीर के निजाम में उपेक्षित महसूस करता था। नई व्यवस्था बनने से केंद्रशासित प्रदेश का दर्जा मिल गया, किन्तु धीरे-धीरे समझ आने लगा कि बिना विधानसभा के केन्द्रशासित प्रदेश का दर्जा आकाँक्षाओं को पूरा नहीं कर पाएगा। खासकर वहाँ की जमीनों पर, जिनकी खरीद-बिक्री पर धारा 370 की वजह से रोक लगी थी, बाहरी कब्जे का खतरा पैदा हो गया था।

पहाड़ के लोग कठिन परिस्थितियों में जीवन-यापन करते हैं और उनके लिए मुख्यधारा के धन्ना सेठों से प्रतिस्पर्धा कर पाना संभव नहीं होता। यदि खुले खेल की नौबत आती है तो स्थानीय लोग तात्कालिक लाभ के लालच में अपनी जमीनों और संसाधनों से वंचित हो जाएंगे। इस समझ के चलते ही चुनी हुई विधानसभा के साथ संविधान की 'छठी अनुसूची' के प्रावधान लागू करने की मांग उठने लगी थी, जिसका सत्तारूढ पार्टी और केन्द्र सरकार ने वादा भी किया था।

विशालकाय सौर-ऊर्जा और पवन-ऊर्जा परियोजनाओं के लिए 80 वर्ग किलोमीटर जमीन पांग क्षेत्र में अधिग्रहण की गई है। 21 मार्च 2003 को राज्यसभा में सूचना दी गई थी कि पांग, डबिंग, और खरनाक में सौर, पवन उर्जा के लिए 250 वर्ग किलोमीटर जमीन अधिग्रहण की जाएगी। 2070 मेगावाट जलविद्युत बनाने की भी योजना है। लद्दाख में बहुत से दुर्लभ खनिज पाए जाते हैं जिनके परिवहन के लिए विशाल सड़क और रेल परियोजनाएं हैं। कुछ खनन पट्टे दिए भी गए हैं। जाहिर है, स्थानीय चुनी हुई सरकार न होने से इतने बड़े पैमाने पर कॉर्पोरेट घरानों के परियोजना-कार्यों से पर्यावरण को होने वाली हानि को कौन रोक सकेगा? जिन कॉर्पोरेट कंपनियों को अपने लाभ के अलावा कुछ नहीं दिखता, उनके भरोसे स्थानीय लोग इस संवेदनशील पर्यावरण को नहीं छोड़ना चाहते।

'छठी अनुसूची' के प्रावधान लागू होने से स्थानीय व्यवस्था को इन परियोजनाओं की मनमानी रोकने के कुछ कारगर उपकरण मिलेंगे। यह तो देशहित में ही है कि स्थानीय लोगों की सहभागिता सुनिश्चित करके विकास को पर्यावरण-सम्मत दिशा दी जाए। इसी के साथ कारगिल और लेह के लिए दो अलग-अलग लोकसभा सीटें और नौकरियों में स्थानीय निवासियों को संरक्षण की मांग है। ये मांगें किसी भी हालत में संविधान से बाहर नहीं हैं। संविधान के विभिन्न प्रावधानों के अंतर्गत अन्य कई राज्यों में आर्थिक और सामाजिक तौर पर पिछड़े समुदायों को इस तरह के संरक्षण दिए गए हैं। लद्दाख में 90 से 95 प्रतिशत आबादी जनजातीय समुदायों की है जिनकी विशिष्ट संस्कृति है।

उनकी मांगें तर्क-सम्मत ही हैं। हां, उनमें संवाद से कुछ घटा-बढ़ी तो की ही जा सकती है, किन्तु सरकार ने इस मामले को लटकाकर पेचीदा बनाने का काम किया है। आन्दोलनकारी लंबे समय से आशावान थे किंतु सरकार ने दमन का रवैया अपनाया।

बातचीत की कुछ पहलें तो हुईं, किन्तु परिणाम नहीं निकल सके। इससे क्षुब्ध कुछ युवाओं ने लद्दाख में पिछले दिनों अवांछित तोड़-फोड़ करके अपने ही आन्दोलन को कमजोर करने की गलती कर दी। 24 सितंबर को अनशन पर बैठे लोगों में से कुछ की हालत बिगड़ने के कारण भी उपेक्षा-जनित क्रोध हावी हो गया। इससे सरकारों को आन्दोलन के नेतृत्व को कैद करने का बहाना मिल गया और समाज की सहानुभूति बटोरने के प्रयास आन्दोलन विरोधी शक्तियों द्वारा किये जाने लगे।

प्रशासन की ओर से गोलीबारी करके स्थिति को संभालने के अन्य उपायों-हल्के लाठीचार्ज, आंसूगैस, रबड़ की गोलियों के विकल्प, पानी की बौछार आदि प्रयोग किये बिना सीधे गोली चलाई, वह भी टांगों पर चलाने के बजाये घातक तरीके से चलाई गई जिसमें चार युवाओं की दुखद मृत्यु हो गई। इस तरह की घटनाएं समस्या के समाधान में दोनों ही तरफ से बाधक सिद्ध होती हैं जिनसे आन्दोलनकारियों, सरकारों और प्रशासन को बचना चाहिए था। अब सारी जिम्मेदारी सोनम वांगचुक पर डालकर, हालात को समाधान से हटाकर आपसी अवांछित अहंकार की प्रतिस्पर्धा की ओर मोड़ देना दीर्घकालीन देशहित में नहीं है।

ऐसे में शीघ्र बातचीत द्वारा मसले के जरूरी तत्वों को समझकर फैसला किया जाना चाहिए। सोनम वांगचुक के चरित्रहनन के प्रयास निंदनीय हैं। 'एफसीआरए' (फॉरेन कन्ट्रीब्यूशन रेगुलेशन एक्ट) के प्रावधानों के उलंघन का आरोप लगाया जा रहा जिनका हर साल निरीक्षण होता है। आज जब सोनम आन्दोलन का नेतृत्व करने लगे तभी उन प्रावधानों के उलंघन की बात क्यों की जाने लगी? इसका अर्थ तो यह हुआ कि इन प्रावधानों का प्रयोग समय-समय पर सरकार ऐसी आवाजों को कुचलने के लिए करती है जिनको वह नापसंद करती है।

-सप्रेस

अमिताभ बच्चन

दुर्गेश मोहन

तेजी बच्चन की आंखों के तारे,
हरिवंश राय बच्चन के राज दुलारे।
मेगा स्टार अभिनेता अमिताभ।
संपूर्ण दुनिया में पाई प्रसिद्धि,
आपके हैं करोड़ों फैन।
बच्चन जी ग्रेजुएट होकर,
कोलकाता की कंपनी
में किए थे काम।
फिर फिल्म जगत में अग्रसर हो,
कभी नहीं किए आराम।
अमिताभ की फिल्में यादगार हैं,
जंजीर,सूर्यवंशम और बागवान।
इसे दर्शकों ने किया पसंद,
दिया स्नेह सम्मान।
केबीसी में सफल प्रस्तोता
बनकर किए राष्ट्र का उद्धार।
यह प्रतियोगिता मशहूर होकर,
दर्शकों के मध्य पाया प्यार।
हेमवती नंदन बहुगुणा को हराकर,
राजनीति में बनाई विशिष्ट पहचान।
भारत के सौभाग्यशाली व्यक्ति,
तुसाद संग्रहालय में लगी मूर्ति।
यह अपने में है बेमिसाल,
आपकी अक्षुण्ण रहेगी कीर्ति
नहीं है कोई जोड़।
आपके कायल हैं दर्शक,
बच्चन जी हैं बेजोड़।
फिल्म फेयर व पद्मविभूषण पा
आपने बढ़ाया देश का मान।
सारे जहां से अच्छा,
हमारा हिंदुस्तान है महान।
बच्चन परिवार है बड़ा महान,
ग्रहण किया पद्म अलंकरण।
सारे संसार में है विख्यात,
नाम गूंजता रहेगा कण-कण।

-बिहटा, पटना (बिहार)

दो दिवसीय आवासी संपूर्ण चिकित्सा शिविर का हिंदी भवन में हुआ शुभारंभ

निर्दलीय संवाद

भोपाल। विश्व गुरु भारत फाउंडेशन (न्यास) द्वारा निरोग भारत अभियान के अंतर्गत ११-१२ अक्टूबर को श्यामला पहाड़ी स्थित हिंदी भवन में स्वास्थ्य शिविर का शुभारंभ फाउंडेशन के संयोजक श्री गोविंददास भूतड़ा और विशेष अतिथि निर्दलीय प्रकाशन के संस्थापक संपादक कैलाश आदमी एवं अन्य प्रमुख पदाधिकारियों ने सरस्वती प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर किया।

कार्यक्रम के आरंभ में फाउंडेशन के संयोजक श्री भूतड़ा ने बताया कि शिविर आज सायंकाल ५ बजे तक चलेगा। अगले दिन १२ अक्टूबर को भी शिविरार्थी शिविर में रहकर स्वास्थ्य लाभ ले सकेंगे। इस हेतु सैकड़ों की संख्या में लोगों ने ऑनलाइन पंजीयन कराया है। कहा गया था कि समर्थजन इस अभियान हेतु दान देकर आयकर की धारा ८०जी के अंतर्गत ५० प्रतिशत छूट का लाभ ले सकते हैं अतएव कई सहयोगी संस्था को सहयोग कर रहे हैं। फाउंडेशन के सलाहकार श्री प्रकाश करकरे और राष्ट्रीय सचिव डॉ. सच्चिदानंद शांडिल्य उद्घाटन के अवसर पर मंचासीन थे।

दवामुक्त जीवन मिशन मुंबई के संतोष गुरुजी, प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. श्याम सुंदर गुप्ता, आयुर्वेद-एलोपैथिक समन्वित चिकित्सक डॉ. नरेंद्र जैन, भारतीय वनसेवा अधिकारी रहे डॉ. रामगोपाल सोनी, एक्युप्रेसर विशेषज्ञ डॉ. शकुंतला पांडा (दिल्ली) तथा निरोग भारत अभियान मध्यप्रदेश से जुड़े चिकित्सकों में डॉ. पूर्णिमा दाते (रसाहार), डॉ. हेमंत शुकलीकर (प्राकृतिक चिकि.), डॉ. रचना पांडे (एलोपैथ), प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. सपना गुप्ता (इंदौर), होमोपैथ डॉ. ऋषि सागर (जबलपुर) और प्राकृतिक चिकित्सक डॉ. केएल रंगवानी शिविरार्थियों को स्वास्थ्य क्रांति के अंतर्गत शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास पद्धतियों से जोड़कर लाभान्वित कर रहे हैं।

सोनम वांगचुक की रिहाई की मांग करते हुए सर्वोच्च न्यायाधीश पर जूते से हमला निंदनीय

निर्दलीय के लिए जनकलाल ठाकुर

दुर्ग। छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा ने कैम्प 1 शहीद भवन से रैली निकालकर जैन भवन चौक में सोनम वांगचुक की निःशर्त रिहाई, सर्वोच्च न्यायाधीश गांवई पर जूते से अमानवीय हमला, दलित, आदिवासियों और धार्मिक अल्पसंख्यकों पर बढ़ते हमलों एवं छत्तीसगढ़ के स्थानीय मुद्दे को लेकर नारेबाजी करते हुए रैली एस डी एम आफिस में पहुंची। एस डी एम आफिस में कोई भी अधिकारी उपस्थित नहीं रहने पर लोग आक्रोशित होकर आफिस के गेट पर ही धरने पर बैठ गए ओर नारेबाजी करते रहे एस डी एम साहब अपना दौरा बीच में छोड़ कर ज्ञापन लेने आए। राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री के नाम संबोधित ज्ञापन अनुविभागीय दंडाधिकारी डौण्डी लोहारा दल्ली राजहरा को सौंपा गया।

पूर्व विधायक व छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष जनक लाल ठाकुर जी ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए बताया कि सोनम वांगचुक बहुप्रतिष्ठित समाजिक कार्यकर्ता, शिक्षा सलाहकार, वैज्ञानिक व्यक्तित्व के धनी हैं देश के लिए केई अविष्कार किया है। ऐसे व्यक्ति को अचानक से देश के लिए खतरा और देशद्रोही बताकर कारागार में डालना सरकार की साजिश है पहाड़ों को निजी हाथों में सौंप कर लूट का रास्ता बनाने का षड़यंत्र रचा गया है।हम सोनम वांगचुक की निःशर्त रिहाई की मांग करते हैं।

श्री गवई उच्चतम न्यायालय के 16 सितंबर के फैसले को सनातन विरोधी कहते हुए जूते से अमानवीय हमला करना ये मनुवादी विचार धारा से प्रेरित है। ये हमला शिक्षा और संविधान पर हमला है।हम ऐसे घोर अमानवीय कृत्य की कड़ी निन्दा करते हैं और ऐसे अमानवीय कृत्य को अंजाम देने वालों पर त्वरित कठोर कार्यवाही करने की मांग करते हैं जिससे देश में ऐसी घटनाओं की पुनरावृति न हो।

पिछले 10-11 सालों में दलितों पर हमला, आदिवासियों पर हमला, धार्मिक अल्पसंख्यकों पर हमला बहुत ज्यादा तेज हुए हैं। इन पर हमले करने वालों को राजनैतिक संरक्षण प्राप्त होता है इसलिए इनके हौसले और बुलंद होते हैं। ऐसे लोगों पर कठोर कार्यवाही होनी चाहिए। छत्तीसगढ़ सरकार स्मार्ट बिजली मीटर की आड़ में जनता से दुगुना तिगुना बिल वसूला जा रहा है। और बिजली कम्पनियों के लिए लूट का रास्ता खोला जा रहा है। अतः हम मांग करते हैं कि दुगुना तिगुना बिजली बिल वसूलना बंद किया जाए। लमती पंचायत के आश्रित ग्राम तुएगोंदी को समुदायिक पट्टा न दे कर मंदिर के आड़ में संत बालकदास को पट्टा देने की शासकीय साजिश पर तत्काल प्रतिबंध लगाई जाय और विष्णु देव साय सरकार द्वारा जनता को शराब का आदी बनाया जा रहा है।मूल भूत मुद्दों से लोगों का ध्यान भटकाने के लिए नशें में ही डुबा रही है। देश में बेरोजगारी दर दिन ब दिन तेजी से बढ़ रही है सरकारी नौकरी के पद खत्म किया जा रहा है। प्राईवेट सेक्टर में भी स्कील्ड की आड़ में स्थानीय बेरोजगारों को धोखा दिया जा रहा है। इन मुद्दों पर त्वरित कार्यवाही न होने पर छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा, छग माईस श्रमिक संघ, जन मुक्ति मोर्चा, सीटू युनियन, गोण्डवाना समाज, बौद्ध समाज,हल्बा समाज और संयुक्त मोर्चा ने व्यापक व उग्र आंदोलन की चेतावनी दी है। प्रदर्शन में जनक लाल ठाकुर के साथ रामचरण नेताम, राजाराम बरगद, बिहारी ठाकुर, ललन साहू, सर्व आदिवासी समाज से देवेन्द्र उइक, संतोष घराना, कुंभकरण पिस्दा,संत राम ठाकुर, विनोद मिश्रा, रामदीन गुप्ता,प्रमोद कावले, मुकेश मांझी, छबीला कोरम, संगीता, ममता मंडावी, सुमन उइके, हेमंत कांडे, श्री राम, राजू साहू, टोमन, भूपेंद्र, हितेश, सैकड़ों कार्यकर्ता और संघठन के लोग इस धरना प्रदर्शन में शामिल हुए।